मोह को बनाएं निराधार

१२ जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'ईंधन के समाप्त होने पर जैसे अग्नि शांत हो जाती है, इसी प्रकार मोहनीय कर्म के क्षीण होने पर अन्य कर्म भी क्षीण हो जाते हैं। ईंधन अग्नि का आधार है, उसके बिना अग्नि आधारहीन बन जाती है। उसी प्रकार मोह कर्म के अभाव में अन्य कर्म निराधार हो जाते हैं और उनका अस्तित्व समाप्ति की ओर अग्रसर हो जाता है। साधक अभ्यास के द्वारा मोहभाव को कमजोर करने का प्रयास करे।'

आचार्य भिक्षु के अंतेवासी शिष्य सतयुगी मुनि खेतसीजी के जीवन प्रसगों का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मुनि खेतसीजी स्वामी में साधना का अच्छा विकास था। विनम्रता के क्षेत्र में उनका उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। आचार्य भिक्षु के प्रति उनके मन में अनन्य श्रद्धा और समर्पणभाव था, स्वामीजी की सेवा में वे पूर्ण सजगता के साथ तल्लीन रहते थे। उनकी अहंविजय की साधना प्रखर थी। युवाचार्य के रूप में अपना नाम लिखित होकर हटने की जानकारी मिलने पर भी समभाव में रहना उनकी विशेष साधना थी।' आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का अभिभाषण हुआ।

मुनि विजयकुमारजी ने अपने दीक्षा के पैंतालीस वर्षों की परिसंपन्नता पर भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त करते हुए अपनी दो कृतियों की पांडुलिपियां पूज्यप्रवर को उपहृत की। आचार्यवर ने कहा--'मुनि विजयकुमारजी स्वामी के संयम पर्याय की युवावस्था पूरी हो रही है। ये ऋजु, विनीत, शासन-शासनपति के प्रति श्रद्धाभाव रखने वाले अच्छे संत हैं। इनमें प्रतिभा है, सृजनधर्मिता है, इनकी बहुत कृतियां प्रकाश में आई हैं। साहित्य के क्षेत्र में विकास होता रहे और निर्मलता बढ़ती रहे।

बोधिस्थल में बोधि दिवस

तेरापंथ के आद्य आचार्य भिक्षु के पांच प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में एक है--राजनगर। प्राप्त इतिहास के अनुसार राजनगर के तत्कालीन श्रावकों के द्वारा संतों को वंदना छोड़ने के निर्णय से चिंतित रुघनाथजी महाराज के निर्देश पर मुनि भीखणजी वि.सं.१८१५ में राजनगर आए। वह समय उनके जीवन का 'टर्निंग पोइंट' बना और उनके लिए बोधि संप्राप्ति का ऐतिहासिक दस्तावेज बन गया।

पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार परम पूज्य आचार्यवर बोधि दिवस के कार्यक्रम हेतु केलवा से राजनगर की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में अनेक ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। पूज्यप्रवर ने मार्गवर्ती ठाकुरगढ़ (बापू मार्बल्स) में अल्पकालीन प्रवास किया। श्री हस्तीमल चपलोत ने अपने पूरे परिवार के साथ पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूरे परिवार में उल्लास का माहौल था। यहां से प्रस्थान कर आचार्यप्रवर भव्य विशाल अनुशासित रैली के साथ राजनगर में बस स्टेण्ड, दादर बाजार, दाणी चबूतरा होते हुए उस ऐतिहासिक दुकान में भी पधारे, जहां आचार्य भिक्षु ने सं. १८१५ का चतुर्मास किया था। उस समय नलियों जैसे खपरेल से आच्छादित कच्ची दुकान आज तीन दुकानों में विभक्त है। उन दुकानों की जमीन से ऊंचाई पूर्ववत रखी गई है। अपनी दुकान (भिक्षु जनरल स्टोर) में श्री चंद्रप्रकाश बड़ोला ने पूज्यप्रवर का अभिवंदना की। तत्पश्चात् आचार्यवर भिक्षु बोधि स्थल पर पधारे। यहां साध्वी विद्यावतीजी 'प्रथम' (श्रीडूंगरगढ़) ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ अपने चतुर्मास स्थल में पूज्यप्रवर का श्रद्धासिक्त अभिनंदन किया। आचार्यप्रवर भिक्षु बोधि स्थल से सौ फीट रोड़ पर स्थित सात बीघा भूभाग में विकसित हो रहे भिक्षु निलयम् में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

विशाल निर्मीयमाण हॉल में आयोजित बोधि दिवस कार्यक्रम में मुनि पानमलजी, साध्वी विद्यावतीजी, साध्वी कौशलप्रभाजी, साध्वी सूर्ययशाजी, स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री गणपत धर्मावत, पूर्व पंचायत प्रधान श्री गुणसागर कर्णावट, श्री अशोक डूंगरवाल, श्रीमती निर्मला चिंडालिया, वंदना मादरेचा ने बोधि दिवस और आचार्यप्रवर के राजनगर पदार्पण के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। स्थानीय कन्या मंडल एवं महिला मंडल की बहनों ने समूह गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन श्री सुरेश कावड़िया एवं संचालन सभा के मंत्री श्री रमेश चपलोत ने किया।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मोहनीय कर्म कर्मों का मूल है। जिस प्रकार मूल को सिंचन न मिलने पर पौधा सूख जाता है, उसी प्रकार मोहनीय कर्म के सिंचन के अभाव में अन्य पापकर्मों का भी बंधन नहीं होता। महामना आचार्य भिक्षु का मोह कृश हो गया था। उनमें अमोह की चेतना जागृत थी। उसी का परिणाम था कि उनमें प्रबल आत्मार्थिता का भाव परिपुष्ट बना। आचार्य भिक्षु के बोधि-प्राप्ति के प्रसंग की चर्चा

करते हुए आचार्यवर ने कहा--स्वामीजी के पास तर्कबल, बुद्धिबल था। समाज में उनके वैराग्य का गहरा प्रभाव था। जब राजनगर के श्रावकों ने संतों को वंदना करनी छोड़ दी, तब गुरु रुघनाथजी महाराज ने भीखणजी को सर्वाधिक योग्य समझते हुए उन्हें राजनगर जाकर श्रावकों को समझाने का निर्देश प्रदान किया। स्वामीजी द्वारा मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से समझाने पर उन श्रावकों ने पुनः वंदना करनी प्रारंभ कर दी। किन्तु रात्रि में उन्हें आकस्मिक तेज ज्वर हुआ, उस समय उन्हें आंतरिक आलोक मिला। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा चातुर्मास आगम मंथन में बिताया। भिक्षु स्वामी जैसा कर्तृत्व दुर्लभ है, विरल है। उनमें स्पष्ट कहने का साहस था। उनका तार्किकबल, बुद्धिबल और वैराग्य प्रखर था।'

राजनगर समागमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के दौरान सं. २०१७ में गुरुदेव तुलसी केलवा में कार्यक्रम संपन्न कर राजनगर चतुर्मास हेतु पधारे। आज मैं राजनगर में बोधि दिवस का कार्यक्रम मनाने आया हूं और यहां से केलवा चतुर्मास के लिए जा रहा हूं। राजनगर चतुर्मास करने पहुंची साध्वी विद्यावतीजी को भी हमारे आने से प्रसन्नता हो रही होगी।' आचार्यवर ने प्रसंगवश राजनगर के स्व. मुनि चंपालालजी 'मीठियां' और करीब दो माह पूर्व राजनगर में दिवंगत शासनश्री संघसेवी गणवत्सल मुनि बालचन्दजी का स्मरण किया। आचार्यवर ने बोधि दिवस के संदर्भ में विशेष रूप से रचित गीत का संगान किया। गीत गत विज्ञप्ति में प्रकाशित है।

मध्याह्न में आचार्यवर ने स्थानीय तेरापंथी परिवारों को उपासना का अवसर प्रदान किया। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से श्रद्धालुओं ने विविध संकल्प स्वीकार किए। स्थानकवासी श्रमण संघ के रवीन्द्र मुनि परमपूज्य आचार्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुए और विभिन्न विषयों पर वार्तालाप किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में नगर की विभिन्न संस्थाओं द्वारा पूज्यप्रवर का नागरिक अभिनंदन किया गया। स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद की कार्यकारिणी ने मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. बसंतीलाल बाबेल से शपथ स्वीकार की। स्थानीय ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने मनमोहक प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर के इस एक दिवसीय राजनगर प्रवास का स्थानीय तथा आसपास के क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने भरपूर लाभ उठाया।

चातुर्मासिक चतुर्दशी पर करणीय का निर्देश

१४ जुलाई। प्रातःकाल आचार्यवर ने भिक्षु निलयम् राजनगर से विहार किया। राष्ट्रीय राजमार्ग नं. ८ पर अवस्थित मार्गवर्ती पसून्द गांव के राजकीय विद्यालय में आचार्यवर का पादार्पण हुआ। स्थानीय शिक्षकों व विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। विद्यालय परिसर के परिपार्श्व में जिंदगी बसर कर रहे गाडोलिया लुहार परिवार के अनुरोध पर करुणामूर्ति पूज्यप्रवर ने करुणावृष्टि कर उसकी झोपड़ी में चरण स्पर्श किया। साथ चल रहे कार्यकर्ताओं के मुंह से अनायास शब्द निकल पड़े--'यह तो निहाल हो गया, इसकी तकदीर खुल गई।' पूज्यप्रवर मोखमपुरा गांव में एक तेरापंथी परिवार के घर में भी पधारे। परिवार के सभी सदस्य अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर प्रफुल्लित थे। मोखमपुरा गांववासियों ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर स्वयं को पावन बनाया। केलवा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री बाबूलाल कोठारी के व्यवसायिक प्रतिष्ठान 'विकास मार्मो' में आचार्यवर का अल्पकालिक प्रवास हुआ। सम्पूर्ण कोठारी परिवार आचार्यप्रवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर धन्यता की अनुभूति कर रहा था। यहां समायोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक पाथेय प्रदान कर आचार्यवर केलवा स्थित पावस-प्रवास स्थल 'महाप्रज्ञ भवन' में पधारे।

चातुर्मासिक चतुर्दशी पर आयोजित प्रातः कालीन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी ने पूज्यप्रवर द्वारा निर्दिष्ट 'केलवा नशामुक्ति अभियान' की कार्ययोजना प्रस्तुत की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मंत्री मुनि सुमेरमलजी ने उपस्थित जनसमूह को चतुर्मास प्रवास का भरपूर लाभ उठाने की प्रेरणा प्रदान की।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'यदि बीजों को जला दिया जाए तो उनमें अंकुरण की संभावना समाप्त हो जाती हैं, ठीक इसी प्रकार मोह कर्म के बीजों को नष्ट कर देने पर बंधन समाप्त हो जाता है। राग व द्वेष कर्म के बीज हैं, यदि इन्हें विनष्ट कर दिया जाए तो जन्म-मरण की परंपरा स्वतः समाप्त हो जाती है। जिसने अपनी साधना के बल पर इन बीजों को समाप्त कर दिया, वह आत्मा नमस्कार के योग्य है।'

चतुर्मास के समय को तपस्या व साधना की दृष्टि से श्रेष्ठ बताते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'चतुर्मास काल में सबको कुछ विशेष साधना करनी है। इस समय साधु-साध्वियां एक क्षेत्र के साथ आबद्ध हो जाते हैं, उन्हें तो विशेष लक्ष्य बनाकर समय का सदुपयोग करना ही है। श्रावक समाज भी इस दौरान विशेष साधना में अपने समय का नियोजन करे। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की विशेष आराधना हो।' चतुर्मास काल में करणीय कार्यों का दिशा-निर्देश प्रदान करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--

- **पंचाचार की विशेष अराधना की जाए।**
- **श्रावक सम्बोध को कंठस्थ करने का प्रयत्न करें।**
- **अधिकाधिक बारहव्रती श्रावक बनें।**
- **ज्ञानशाला का उपक्रम व्यवस्थित रूप में चले।**
- **जैन विद्या कार्यशाला की समायोजना हो।**
- **यथाशक्ति तपस्या का क्रम चले।**
- **रात्रि भोजन, जमीकन्द, सचित्त का परित्याग हो।**
- **अधिकाधिक सामायिक का प्रयोग करें।**
- **अणुव्रत प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के कार्यक्रम भी समायोजित हो।**

'केलवा नशामुक्ति अभियान' को सार्थक और सफल बनाने की प्रेरणा प्रदान करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा--'सम्पूर्ण केलवा नशामुक्त बने, तदर्थ सघन प्रयत्न हो। अलग-अलग समाजों की गोष्ठियां आहूत कर उन्हें प्रेरित किया जाए और यथावश्यकता साधु-साध्वियां पृथक-पृथक बस्तियों में जाकर जनता को नशामुक्ति हेतु प्रेरित करें।'

स्थापना स्थली में २५२ वां तेरापंथ स्थापना दिवस

१५ जुलाई। आषाढ़ी पूर्णिमा का पावन दिवस। परम पूज्य गुरुदेव की मंगल सन्निधि में तेरापंथ की उद्गमस्थली केलवा में २५२ वां तेरापंथ स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ समायोजित हुआ। परमाराध्य आचार्यवर प्रातः प्रवास स्थल से उद्गम स्थली अधेरी ओरी में पधारे और निर्धारित चौकी पर विराजमान होकर मंगलपाठ और 'विघन हरण मंगल करण'...। पद्य का उच्चारण किया।'

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में समणीवृन्द ने भिक्षु अष्टकम् का संगान किया। तत्पश्चात प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलालजी, मुनि विजयकुमारजी, मुनि प्रसन्नकुमारजी, साध्वी आरोग्यश्रीजी आदि ने तेरापंथ और आचार्य भिक्षु के संदर्भ में भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीवृन्द, स्थानीय महिला मंडल ओर कन्या मंडल ने समवेत स्वरों में गीतों का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

मुनि सुमेरमलजी सुदर्शन ने शासन गौरव मुनि बुद्धमलजी की कृति 'तेरापंथ का इतिहास' के प्रथम खण्ड का नवीन संस्करण पूज्यवर को समर्पित किया। साध्वी कल्पलताजी ने अपनी कृति 'तेरापंथ का यशस्वी साध्वी समाज' के संदर्भ में विचार अभिव्यक्त करते हुए कृति के तीन खण्ड आचार्यप्रवर को उपहृत किए। इस कृति में तेरापंथ की विशिष्ट साध्वियों के जीवन वृत्त को निबद्ध किया गया है। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी द्वारा रचित और समणी पुण्यप्रज्ञाजी आदि समणीवृन्द के स्वरों में प्रस्तुत 'विकास की वर्णमाला' की सी.डी. विजया हिंगड़ और विनोद जिंदल ने श्री चरणों में अर्पित की।

श्री वरधीचन्द, सम्पतलाल, ख्यालीलाल, गणपतलाल मादरेचा परिवार के द्वारा चंदनकाष्ठ पर निर्मित अंधेरी ओरी का कलापूर्ण प्रतिरूप पूज्य चरणों में भेंट किया गया। इस कलाकृति में तेरापंथ और आचार्य भिक्षु से सम्बद्ध विविध घटना प्रसंगों को सुन्दर रूप में उकेरा गया है।

मंत्री मुनि सुमेरमलजी ने अपने अभिभाषण में कहा--आज का दिन धर्मसंघ के लिए अति महत्त्वपूर्ण और मंगलकारी है। हम जिस धर्मसंघ में साधना कर रहे हैं, उसका प्रादुर्भाव आज के ही दिन केलवा नगरी की अंधेरी ओरी में हुआ था। इस अवसर पर मैं यही मंगलकामना करता हूं कि यह धर्मसंघ दिन प्रतिदिन प्रगति करता रहे, आचार्यों के पवित्र अनुशासन में संघ का प्रत्येक व्यक्ति आध्यात्मिक विकास करता रहे।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--आषाढी पूर्णिमा का दिन गुरुपूर्णिमा के रूप में भी मनाया जाता है। गुरु वही होता है, जिसकी आत्मा पवित्र होती है। तेरापंथ में गुरु का सर्वोपरि स्थान है। आज के दिन धर्मसंघ को आचार्य भिक्षु के रूप में पवित्रात्म यशस्वी गुरु मिले। अनुत्तर संयम, तप और त्याग से भावित आचार्य भिक्षु की चेतना अत्यन्त पवित्र थी। उनका आभामंडल तेजस्वी था। इस पावन अवसर पर उस आत्मनिष्ठ, आध्यात्मनिष्ठ, आचारनिष्ठ और आत्मार्थी महापुरुष के चरणों में सादर श्रद्धाप्रणति।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने स्थापना दिवस के संदर्भ में अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए कहा--महामना आचार्य भिक्षु दृढ़ संकल्पी, दृढ़ व्रती, तेजस्वी और पुरुषार्थी सन्तप्रवर थे। वे महान व्यक्तित्व और कर्तृत्व के धनी थे। उनकी आत्मार्थिता बेजोड़ थी। उनमें दुनिया के चालू प्रवाह को बदलने की क्षमता थी। वे एक व्यक्ति नहीं शक्ति

के रूप में धरती पर अवतरित हुए। उन्हें विविध अवसरों पर मनाते-मनाते शताब्दियां बीत रही हैं। अब हम संकल्प करें कि भिक्षु बनकर ही भिक्षु को मनाएंगे। इसके लिए आत्मनिष्ठा, अध्यात्मनिष्ठा और संघनिष्ठा संघ के प्रत्येक सदस्य में जागृत हो।' महाश्रमणीजी ने इस अवसर पर अपनी एक भावपूर्ण कविता भी प्रस्तुत की। वह इस प्रकार है--

जो अंधेरे से लड़ा तोड़ा तमस का सघन घेरा।
दे गया ध्रुव रोशनी उस भिक्षु को प्रणिपात मेरा।।

क्रांतद्रष्टा युगपुरुष ने कुप्रथाओं को कुरेदा
मुक्तिकामी चेतना से बन्धनों का व्यूह छेदा
जैन वाङ्मय का सघन स्वाध्याय करता ही रहा जो
किन्तु सुख-सुविधा-पिपासा हुई पलभर भी न पैदा
छोड़ स्थानक प्रेतवन में ही किया पहला बसेरा।।

क्रांति की जलती मशालें थाम हाथों में चले तुम
शुष्क मरुधर की धरा पर कल्पपाद बन फले तुम
शान्ति का संदेश जन-जन को दिया निज जिन्दगी से
ज्योति की बनकर शिखा निर्धूम निर्भय हो जले तुम
निराशा की यामिनी में रच दिया नूतन सवेरा।।

थी न पगडंडी कहीं पर पथ नया तुमने बनाया
हे प्रभो! यह पंथ तेरा कर समर्पण तोष पाया
बवंडर भारी विरोधों के खड़े थे हर कदम पर
उतर कर गहराइयों में सृजन का उत्सव मनाया
नहीं चित्रित कर सका उस चित्र को कोई चितेरा।।

फौलादी संकल्प के धनी थे आचार्य भिक्षु

तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्यप्रवर ने तेरापंथ स्थापना दिवस के पावन अवसर पर अपने पावन प्रवचन में कहा--'आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व विशिष्ट था। वे निर्भीक, साहसी, तत्त्ववेत्ता, अनुशासनवेत्ता, आचारनिष्ठ और फौलादी संकल्प के धनी आचार्य थे। उनके जैसी संकल्पनिष्ठा विरल व्यक्तियों में ही मिलती है। उनमें त्याग और तप का बल था। वे केवल आचार की ही बात नहीं करते थे, उनकी प्रतिभा भी विलक्षण थी। उसके द्वारा उन्होंने विपुल साहित्य का सृजन किया। यह तेरापंथ का परम सौभाग्य है कि उसे ऐसे महान गुरु प्राप्त हुए।'

तेरापंथ स्थापना दिवस के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने आगे कहा--आज तेरापंथ शासन का जन्मदिन है, आचार्य भिक्षु ने आज के ही दिन अंधेरी ओरी के प्राङ्गण में अभिनव दीक्षा स्वीकार की। हालांकि तेरापंथ नामकरण पूर्व में हो चुका था, किन्तु वह नामनिक्षेप था 'आचार्य भिक्षु की भावदीक्षा के साथ स्थापित तेरापंथ भावनिक्षेप था। हम आचार्य भिक्षु को याद कर रहे हैं तो साथ में आचार निष्ठा और विचार निष्ठा को भी हमारे जीवन के अभिन्न अंग बनाएं। मै देखता हूं कि हमारे संघ में आज भी कठोर जीवन है, तपस्या है, साधना है, परीषहजय का अभ्यास है। वह और अधिक पुष्ट बने और आत्मनैर्मल्य बढ़ता रहे। तेरापंथ शासन उत्तरोत्तर विकास करता रहे, प्रर्वधमान रहे। संघ में आने वाले साधु-साध्वियां और श्रावक-श्राविकाएं आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ते रहें। आचार्यप्रवर ने स्थापना दिवस के उपलक्ष में रचित गीत का संगान किया। वह पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के दीक्षा दिवस के संदर्भ में कहा--आज से ५१ वर्ष पूर्व परम पूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा केलवा में दीक्षित एक साध्वी साध्वीप्रमुखा के रूप में धर्मसंघ की महान सेवा कर रही है। साध्वीप्रमुखाजी ने गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के शासनकाल में अपनी महनीय सेवाएं दीं, और अब मुझे इनकी सेवाएं प्राप्त हैं। मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे तपी-तपाई जमी-जमाई पढ़ी-पढाई और गढ़ी-गढ़ीई साध्वीप्रमुखा प्राप्त है। मैं तो साध्वियों की व्यवस्था से सम्बद्ध निर्णय लेने पूर्व प्रायः इनसे परामर्श करता हूं और उसे महत्त्व देता हूं। इनमें साधना बोलती है, साहित्यिक क्षमता और प्रतिभा है। साधना के साथ प्रतिभा का योग होना विशेष बात होती है। साध्वीप्रमुखाजी का संयम पर्याय खूब लम्बा हो, साधना प्रवर्धनमान रहे, लम्बेकाल तक संघ की सेवा करती रहें और लम्बेकाल तक साध्वी समाज को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहें। हमारी ओर से अन्तःकरण की मंगलकामनाएं'।

उपहृत सामग्री के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा--'तेरापंथ का इतिहास हमारा प्रसिद्ध साहित्य है, जो शासन गौरव मुनि बुद्धमलजी स्वामी द्वारा आलेखित है। प्रांजल, सुन्दर और वैदुष्यपूर्ण भाषा में लिखित यह ग्रन्थ तेरापंथ इतिहास के विषय में प्रामाणिक जानकारी देने वाला है, जिसे पढ़ते-पढ़ते व्यक्ति आनंद विभोर हो सकता है। हमारे धर्मसंघ में अनेक विशिष्ट साध्वियां हुई हैं, उनका अच्छा इतिहास है। साध्वी कल्पलताजी के श्रम से निष्पन्न 'तेरापंथ का यशस्वी साध्वी समाज' कृति के तीन खण्ड प्रकाशित हुए हैं। साध्वीजी का श्रम श्लाघनीय है। अंधेरी का प्रतिरूप भेंट किया गया। इसमें मानो आचार्य भिक्षु का इतिहास दृश्यरूप में सामने आ गया। यह एक दर्शनीय कलाकृति है।'

सम्बोधन-अलंकरण

पूज्यप्रवर ने तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं की सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए उन्हें विशिष्ट सम्बोधन से सम्बोधित किया, उनकी सूची इस प्रकार है--

१. श्री झमकलाल भंडारी	पेटलावद	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
२. श्री कुन्दनमल चुन्नीलाल कोठारी	रींछेड़	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
३. श्री शंकरलाल सामोता	नाथद्वारा	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
४. श्री भोलीराम राठौड़	अंटालिया	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
५. श्री सूरजमल नाहटा	छापर	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
६. स्व. सोहनलाल गेलड़ा	हरनावां	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
७. श्रीमती सायरदेवी गुन्देचा	नाथद्वारा	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
८. श्रीमती फूलीदेवी कोठारी	गजपुर-सूरत	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
९. श्रीमती संतोषदेवी बोहरा	मोलेला	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१०. श्रीमती मदनदेवी कोठारी	रींछेड़	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
११. श्रीमती सजनदेवी भांडावत	जयपुर	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१२. स्व. श्रीमती कमलादेवी दूगड़	आसीन्द	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१३. स्व. श्रीमती लादीदेवी आंचलिया	अड़सीपुरा-उधना	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

वर्षावास स्थापना अनुष्ठान

मध्याह्न में परम पूज्य गुरुदेव की मंगल सन्निधि में वर्षावास स्थापना अनुष्ठान कर उपक्रम रहा। चतुर्मास स्थापना से पूर्व प्रतिवर्ष होने वाले इस अनुष्ठान में त्रिपदी वंदना के प्रयोग के साथ विविध आध्यात्मिक मंत्रों का समवेत स्वरों में उच्चारण किया गया। बूंदाबांदी के कारण अपने प्रवास स्थल में अवस्थित साध्वीवृंद ध्वनियंत्रों के माध्यम से इस अनुष्ठान की परोक्ष संभागी बनीं। अनुष्ठान के उपरांत पूज्यप्रवर ने मुनिवृंद को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'चतुर्मास प्रारंभ होने जा रहा है। इस चतुर्मास में हम सबका स्वास्थ्य अच्छा रहे, साधना परिपुष्ट होती रहे तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना के द्वारा स्वयं को भावित करते रहें।' अपराह्न में तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष में स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा समायोजित रैली प्रवचन पंडाल से प्रारंभ होकर गांव की विभिन्न गलियों से होती हुई आचार्यवर की मंगल सन्निधि में पहुंच कर परिसंपन्न हुई।

धर्मसंघ के लिए परम पुनीत क्षण

चातुर्मासिक पक्खी के प्रतिक्रमण से पूर्व सांयकालीन गुरुवंदना की वेला। करीब साढ़े सात बजे का समय। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने भावपूर्ण स्वरों में फरमाया--'लगभग यही समय रहा होगा, जब महामना आचार्य भिक्षु ने भावदीक्षा स्वीकार की। यह समय तेरापंथ शासन के जन्म का है, धर्मसंघ के लिए यह परम पुनीत क्षण है। संघ में साधना, ज्ञान दर्शन की आराधना और स्वस्थता वृद्धिंगत होती रहे। भैक्षव शासन चतुर्दिक् उन्नति करता रहे। यही हमारी मंगलकामना।'

केलवा के योगी ले प्रणाम मेरा

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति द्वारा रात्रिकालीन कार्यक्रम धम्मजागरणा के रूप में समायोजित हुआ। प्रख्यात संगायक श्री रवीन्द्र जैन ने सुमधुर स्वरों में आचार्य भिक्षु को अपनी सविनय भावांजलि अर्पित की। श्री जैन ने जब अन्य गीतों के साथ अपनी प्रसिद्ध रचना 'केलवा के योगी ले प्रणाम मेरा...' को प्रस्तुति दी तो उपस्थित

विशाल जनमेदिनी झूम उठी। उन्होंने अपने नवरचित गीत के द्वारा तेरापंथ के ग्याहवें सूर्य को वर्धापित किया। गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं--'सुगुरु शुभ आपके चरण, समस्त आपदाहरण मुनीन्द्र मंगलायतन, नमोस्तु मे महाश्रमण...।' कार्यक्रम के अन्त में श्री जैन ने 'महाश्रमण का अमृत पर्व हमें मिलके मनाना है...।' गीत को आशुरचना के रूप में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में अनेक अन्य संगायकों ने भी स्वामीजी को अपनी श्रद्धा समर्पित की। संचालन श्री सुरेन्द्र कोठारी और श्री अशोक चह्वाण ने किया। परम श्रद्धेय आचार्यवर की स्वल्पकाल के लिए मंगल सन्निधि भी प्राप्त हुई।

२५१ वर्षों बाद इतिहास की पुनरावृत्ति

१६ जुलाई। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज २५१ वर्षों बाद तेरापंथ के आद्य आचार्य भिक्षु के इतिहास की पुनरावृत्ति की। तेरापंथ की स्थापना के बाद प्रथम दिन श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को महामना आचार्य भिक्षु ने केलवा में ठाकुर श्री मोखमसिंहजी के हाथों से प्रथम गोचरी की थी। आचार्य भिक्षु की परम्परा में ग्यारहवें आचार्य श्री महाश्रमण ने भी आज श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के दिन उसी राजभवन में ठाकुर मोखमसिंहजी की परम्परा में ग्यारहवें ठाकुर देवीसिंहजी के हाथों से प्रथम गोचरी की। इससे पूर्व आचार्यप्रवर प्रवास स्थल से अंधेरी ओरी पधारे और वहां मंगलपाठ का उच्चारण किया। पूज्यप्रवर वहां से आचार्य भिक्षु की भांति राजभवन में पधारे। ठाकुर श्री देवीसिंह, श्री ओंकारसिंह, श्री हरिसिंह, श्री हरिओमसिंह आदि ने आचार्यप्रवर की भावपूर्ण अगवानी की। राज परिवार की महिलाओं ने मंगलगीतों से पूज्यपाद का स्वागत किया। गीतों की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं--'सद्गुरु आया पावणा, दूधां बरस्यो मेह...। हो गुरु पैया लागूं राम मिलाय दीज्योजी, या घर बीतत लहर विषय की अमृत घूंट पिलाय दीज्योजी...।'

जब आचार्यप्रवर ने ठाकुर देवीसिंहजी के हाथों से प्रथमदान ग्रहण किया, तब करीब ढ़ाई सौ वर्षों पूर्व का पावन प्रसंग मानो जीवन्त हो उठा। इसके पश्चात पूज्यवर ने परिवार के अन्य सदस्यों के हाथों से भी गोचरी की। अपने परिवार के गौरवपूर्ण इतिहास की पुनरावृत्ति कर संपूर्ण राजपरिवार हर्षाप्लावित था। गोचरी के पश्चात आचार्यप्रवर राजभवन में स्थित राजपरिवार की कुलदेवी नागणेचा माता मंदिर में पधारे और वहां मंगलपाठोच्चारण करते हुए 'बाहर का महल' पधारे। बताया गया--राजभवन के इसी स्थान में आचार्य भिक्षु ने प्रथम आहार ग्रहण किया था। आचार्यप्रवर ने भी यहां कुछ क्षण विराजकर कवलाहार ग्रहण करते हुए फरमाया--'आचार्य भिक्षु ने यहां आहार किया अथवा नहीं किया, यह शोध का विषय है। उनके इतिहास की पुनरावृत्ति करते हुए यही कामना करता हूं कि उनके गुण हममें संक्रान्त हो।'

राजभवन परिसर में समायोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखाजी ने राजपरिवार के सदस्यों को प्रेरणा प्रदान करते हुए अपनी दीक्षा से पूर्व इसी राजभवन में लिए गए गृहस्थ जीवन के अंतिम ग्रास की भी स्मृति की। ठाकुर ओंकारसिंहजी ने कहा--आचार्य भिक्षु की कठोर साधना फल हम आज साक्षात देख रहे हैं कि वर्तमान में जैन धर्म का सच्चा प्रतिनिधित्व करने वाला तेरापंथ धर्मसंघ है, महावीर का वास्तविक उत्तराधिकारी यह संघ ही है। इस धर्म में विश्वभर में छाने की क्षमता है।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने कहा--महामना आचार्य भिक्षु ने अपना प्रथम चतुर्मास केलवा में किया था, मैं भी स्वयं द्वारा घोषित प्रथम चतुर्मास केलवा में कर रहा हूं। उन्होंने इस राजभवन में प्रथम गोचरी की थी, आज मैंने भी यहां इस चतुर्मास की प्रथम गोचरी की है। बताया गया कि भिक्षु स्वामी ने यहीं आहार ग्रहण किया था तो मैंने भी किसी रूप में उसकी पुनरावृत्ति कर दी। राजपरिवार में खूब धार्मिकता, मैत्रीभावना और नैतिक निष्ठा पुष्ट होती रहे।

उस समय कुर्सी नहीं थी

पूज्यप्रवर राजभवन से प्रस्थान कर पुनः अंधेरी पधारे और वहां चन्द्रप्रभु मंदिर के पीछे की ओर भूमि पर विराजमान हुए। मुनिवृन्द ने निवेदन किया--'गुरुदेव! कुर्सी पर विराजने की कृपा कराएं। आचार्यप्रवर ने सहज मुस्कान के साथ फरमाया--'उस समय कुर्सी नहीं थी। स्वामीजी ऐसे ही जमीन पर विराजते होंगे। अतः मैं भी भूमि पर ही बैठा हूं।' कुछ क्षण वहां विराजने के पश्चात आचार्यप्रवर मंदिर के परिवार्श्व में स्थित निर्धारित चौकी पर भी विराजमान हुए और मंगलमंत्रों को उच्चारित कर पुनः प्रवास स्थल पधार गए।

परमात्मा बनें

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। चातुर्मास प्रवास २०११ का कैलेण्डर और पुस्तिका आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी, महामंत्री श्री सुरेन्द्र कोठारी आदि पदाधिकारियों ने पूज्यवर को समर्पित की। इस कैलेण्डर और पुस्तिका की संयोजना में मुनि कीर्तिकुमारजी का निष्ठापूर्ण योग रहा।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मिथ्यात्वी, सम्यक्त्वी और मुनि की आत्मा क्रमशः दुरात्मा, सदात्मा और महात्मा कहलाती है, जिस आत्मा ने चार घाती कर्मों को क्षीण कर लिया, वह परमात्मा बन जाती है और जिसने आठों कर्मों को नष्ट कर दिया, वह सिद्धात्मा कहलाती है। साधना के द्वारा परमात्मा और सिद्धात्मा बनने की दिशा में आगे बढ़ें।'

आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात बड़ी संख्या में उपस्थित सेरा प्रान्त के लोगों ने पूज्यवर से अपने क्षेत्र का स्पर्श करने का भावपूर्ण साग्रह अनुरोध किया। श्रद्धालुओं ने इस संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। करुणा के मूर्तिमान आदर्श आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में फरमाया--**मेवाड़ की इस यात्रा में सेरा प्रान्त में स्थित रावलिया का स्पर्श करने का भाव है।'** पूज्यवर की इस घोषणा से सेरा के श्रद्धालुओं में हर्ष व्याप गया। केलवा कन्या मंडल ने संकल्पों का उपहार श्री चरणों में समर्पित किया। मध्याह्न में छबड़ा के विधायक श्री करणसिंह राठौड़ ने पूज्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

मेधावी छात्र प्रोत्साहन समारोह

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा संचालित मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना का छठा मुख्य कार्यक्रम व सम्मान समारोह आचार्यप्रवर के सन्निध्य में ६, ७ अगस्त, २०११ को केलवा में आयोजित किया गया है। इस अवसर पर चयनित छात्र/छात्राओं को स्वर्ण पदक, रजत पदक व छात्रवृत्तियां प्रदान की जाएंगी। कार्यशाला के साथ आकर्षक पुरस्कार भी रखे गये हैं। यह जानकारी देते हुए सदस्य सचिव हरीश जैन ने पंजीकृत मेधावी छात्र/छात्राओं से कार्यक्रम में भाग लेने का अनुरोध किया है। अधिक जानकारी के लिए मो. नं. ९९९९९८१५२१ पर संपर्क करें।